पं. चैनसुखदास व्याख्यानमाला संपन्न

कुलेश जैन, जयपुर । ''जगद्गुरु रामानन्दाचार्य राजस्थान संस्कृति विश्वविद्यालय में जैन दर्शन का अध्ययन/अध्यापन इसी सत्र से प्रारंभ कर दिया जायेगा ।'' उक्त घोषणा संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. विनोद शास्त्री ने श्री दिगम्बर जैन आचार्य संस्कृत महाविद्यालय में आयोजित पं. चैनसुखदास स्मृति व्याख्यानमाला 2016 के अवसर पर की । मुख्य वक्ता डॉ. कपूरचंद जैन, अध्यक्ष संस्कृत विभाग, श्री कुंद कुंद जैन पी.जी. कॉलेज खतौली ने 'भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में राजस्थान जैन समाज का योगदान' विषय पर लगभग एक घण्टे का व्याख्यान दिया । उन्होंने बीस जैन शहीदों तथा विशेष रूप से राजस्थान के उदयपुर के दो जैन शहीदों आनन्दी और शान्ति का परिचय देते हुए कहा कि ये दोनों शहीद अभी तक अज्ञात हैं, 18-20 साल की अल्पवय में दोनो उदयपुर में गोली लगने से शहीद हो गये थे । दोनों के स्टेच्यू दिल्ली दरवाजा के गेट पर लगे हुए हैं । भारत की प्रथम स्वतंत्रता सेनानी होने का गौरव प्राप्त करने वाली उल्लाल (मेंगलुरु-कर्नाटक) की जैन रानी अब्बक्का का उल्लेख किया । जो सोलहवीं शताब्दी में पुर्तगालियों से लड़ते लड़ते शहीद हो गई थी । राजस्थान के 50 जैन जेलयात्रियों का विस्तार से परिचय तथा सैकड़ो जैनों का नामोल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि ऐसे शहीदों तथा जेलयात्रियों के अवदान पर ही आज हमारी स्वतंत्रता का भव्य प्रसाद खड़ा हुआ है ।

पं. चैनसुखदास का स्मरण करते हुए डॉ. जैन ने कहा कि पंडितजी ने राष्ट्रीयता की जो परिभाषा - 'प्रत्येक देश को स्वाधीन रहने का जन्मसिद्ध अधिकार है, उस अधिकार को जो छीनना चाहे उसका संपूर्ण शक्ति लगाकर सामना करना ही राष्ट्रीयता है' (जैन संदेश, 1 जनवरी 1947) वह आज भी राष्ट्रीय भावना विकसित करने में संजीवनी का काम करती है । प्रबंध समिति के अध्यक्ष श्री नरेश कुमार सेठी ने कहा कि प्रतिवर्ष आयोजित होने वाली इस व्याख्यान माला से जैन संस्कृति के अनछुए पहलु प्रकाशित हुए हैं । उपाध्यक्ष श्री महेन्द्रकुमार पाटनी ने राष्ट्रीय विचार पर होने वाले व्याख्यान को महती उपलब्धि बताया । मंत्री श्री महेशचन्द्र चांदवाड़ ने कुलपतिजी और अतिथियों का स्वागत करते हुए महाविद्यालय का परिचय दिया । प्राचार्य डॉ. शीतलचन्द जैन ने पं. चैनसुखदासजी का परिचय देते हुए सभी का आभार व्यक्त किया । इस अवसर पर राजस्थान के उनके सभ्रांत महानुभावों, विद्यार्थियों के साथ जैन ग्रंथों का रशियन भाषा में अनुवाद करने वाली प्रो. नातालिया विशेष रुप से उपस्थित थी ।

ग्रामीण अंचल में जैन धर्म और शिक्षा की अलख जगाता

ज्योति जैन, खतौली । हाल ही में वही पार्श्वनाथ चौपाटी क्षेत्र जाने का अवसर मिला । यह क्षेत्र आचार्य कल्याणसागरजी महाराज (णमोकार मंत्र वाले) की साधना स्थली रहा है । उनके णमोकार मंत्र की सतत साधना के परमाणु पूरे क्षेत्र में विद्यमान हैं । यह स्थान जिला मंदसौर (म.प्र.) से 14 कि.मी. मुख्य सड़क मार्ग पर स्थित है । इस तीर्थ स्थान पर भगवान पार्श्वनाथ स्वामी का विशाल मंदिर, समवशरण मंदिर, भ. मुनिसुव्रतनाथ की विशाल प्रतिमा एवं सोनगिरीजी, शिखरजी आदि की रचनायें विद्यमान हैं । वातावरण सुख व शांति प्रदान करता है तथा श्रद्धालुओं को आकर्षित करता है । आचार्य सुनीलसागरजी महाराज ससंघ यहां विराजमान थे, उनका स्वाध्याय, संयम साधना और श्रुताराधना उनके मुनि धर्म को श्रेष्ठ बना रही है। अ.भा. दि. जैन विद्वत परिषद का अधिवेशन आचार्य श्री के सानिध्य में संपन्न हुआ । सभी विद्वानों को उनका मार्गदर्शन एवं आशीर्वाद प्राप्त हुआ । अध्यक्ष डॉ. जयकुमार एवं महामंत्री डॉ. सुरेन्द्र भारती के आव्हान पर सभी विद्वानों ने आचार्यश्री का आचार्य पदारोहण दिवस मनाया । पास में ही जैन समाज द्वारा संचालित दि. जैन हायर सेकेण्डरी स्कूल है। वर्तमान में लगभग दो हजार छात्र छात्रायें यहां शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं।

शिक्षा बच्चों का शारीरिक, मानसिक एवं आत्मिक विकास करती है इसी पहलू को ध्यान में रखते हुए श्री विजेन्द्रकुमार सेठी ने अपने अथक प्रयासों से 2004 में इस विद्यालय की स्थापना की । स्कूल स्थापना के मूल में जैन छात्र छात्राओं को शिक्षित करना तो था ही साथ ही आस-पास के 40 गांवों के उन ग्रामीण बच्चों को भी शिक्षित करना था जहां कोई साधन नहीं है । स्कूल बस से यह बच्चे आते हैं और बिना किसी भेदभाव के यहां शिक्षा पाते हैं। यह सभी बच्चे मंदिरजी में दर्शन करने जाते है । 'णमोकार महामंत्र', 'मेरी भावना' और 'गायत्री मंत्र' से स्कूल की शुरुआत होती है । नर्सरी से कक्षा बारहवीं तक की पढ़ाई यहां होती है । साइंस, कामर्स, मैथ आदि सभी विषय योग्य अध्यापकों द्वारा पढ़ाये जाते हैं । हिन्दी-अंग्रेजी दोनों पढ़ाई के माध्यम हैं। 10-12वीं बोर्ड के रिजल्ट शत प्रतिशत होते है । सर्वोत्तम अंक प्राप्त बच्चों को पुरस्कृत किया जाता है । राष्ट्रीय पर्वो के साथ अनेक सांस्कृतिक गतिविधियों को यह विद्यालय संचालित करता है । भाषा और लेखन पर विशेष ध्यान दिया जाता है । श्री शांतिलालजी बड़जात्या, श्री नेमिचंदजी तन-मन-धन से अपना सहयोग दे रहे हैं । वर्तमान में प्रधानाचार्य श्री प्रतापसिंह मारु के नेतृत्व में विद्यालय दिन प्रतिदिन प्रगति कर रहा है । यहां का जैन समाज भी विद्यालय को आर्थिक सहायता प्रदान करने में पीछे नहीं रहता है ।

ज्ञानदान श्रेष्ठतम दान है । इसके द्वारा एक पूरे जीवन का निर्माण होता है । पूज्य गणेशप्रसादजी वर्णी ने जैन समाज में शिक्षारुपी जो अंकुर बोया था आज वह पल्लवित और पुष्पित होकर अनेक नगरों में फलदायक वृक्ष के रुप में सामने आ रहा है, छात्र-छात्रायें अनेक क्षमताओं और गुणों के धनी होते हैं। शिक्षा के माध्यम से ही उनकी प्रतिभा उजागर होती है। आइये हम भी विद्यालय/विद्यार्थियों से जुड़े, उनका सहयोग करें ताकि समाज में नयी चेतना का विकास हो, समाज सशक्त बने एवं धर्म संस्कृति के संरक्षण एवं संवर्धन के साथ देश और राष्ट्र का चहुँमुखी विकास हो । भारत विश्व में महाशक्ति बनकर उभरे । - संपादिका, जैन संदेश, खतौली

समाज की महिलाओं व युवा पीढ़ी से अनुरोध है कि वे अपनी कवितायें, कहानी, लेख हमें अपने चित्र सहित प्रकाशन हेतु भेज सकते है । योग्य रचना को आगामी अंक में प्रकशित किया जावेगा ।

पत्र सम्पादक के नाम...

गोलालारीय दर्शन द्वारा ''प्रयास'' पत्रिका का प्रकाशन किया है । जो बहुत ही सराहनीय एवं संबंधों को जोड़ने वाली अनूठी कड़ी सिद्ध होगी, ऐसी हमारी शुभकामनायें है । विमोचन के समय मैं व्यक्तिगत कारणों से कार्यक्रम में उपस्थित नहीं हो सका जिसके लिए मुझे खेद है । मैं वीरप्रभु से कामना करता हूँ कि आपकी संस्था दिनोंदिन उन्नति के शिखर पर अग्रसर हो । ऐसी शुभकामनाओं के साथ बहुत बहुत बधाई ।

- अरविन्द जैन, जबलपुर

गोलालारीय दर्शन का दिसम्बर अंक प्राप्त हुआ, मुखपत्र नए कलेवर में अच्छा लगा । प्रयास रिश्तों को जोड़ने की अविस्मरणीय झलकियां बहुत सुंदर है । मैं संपादक महोदय का हृदय से आभारी हूँ जो उन्होंने पाठकों के मन की बात सुनकर शब्दजाल पहेली के सही उत्तर देने वालों प्रत्याशी के फोटो प्रकाशित कर सुझाव को मान लिया ।

- आकाश जैन, विदिशा

''प्रयास'' रिश्तों को जोड़ने का... प्रथम प्रयास 'गोलालारीय दर्शन' पत्रिका के पदाधिकारियों के माध्यम एवं अथक परिश्रम द्वारा श्री पवाजी सिद्ध क्षेत्र में सफल आयोजन कर ''प्रयास'' पत्रिका का विमोचन कर गोलालारीय जैन समाज के लिये अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया है । साथ श्री राजेन्द्र बागोजी व संपादक समिति ने उक्त सम्मेलन में आमंत्रित कर हम सभी का सम्मान किया, इसके लिए हम सभी समिति के आभारी है । हमें आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि समिति का निरंतर प्रयास निश्चित रुप से ''प्रयास'' पत्रिका को एक नये आयाम की ओर अग्रेसित करेगा ।

वर्तमान में 'प्रयास' पत्रिका विभिन्न शहरों एवं गांवों में समस्त अभिभावकों तक पहुंच चुकी है । अब आपके प्रयास को सार्थक करना युवक युवतियों के अभिभावकों का एवं उनका है जो रिश्तों को रिश्तों से जोड़ने संलग्न है । अब अभिभावकों को भी अपनी पुरानी सोच एवं दकियानूसी विचारों को दरकिनार कर नई दिशा में सोचना होगा ।

महानगरों में रहने वाले नगर में, नगर में रहने वाले गांवों में संबंध करने से कतराते है । यहां तक तो फिर भी ठीक है परन्तु गांवों में रहने वाले गांवों में संबंध नहीं करना चाहते । यही कारण है आसानी से संबंध नहीं हो पा रहे है । अन्य और भी विसंगतियां हमारे समाज में फैली हुई है जिन्हें व्यक्तिगत रुप से प्रयास कर दूर करने की आवश्यकता है । अन्यथा वर्तमान में जिस गति से अंर्तजातीय विवाह हो रहे है भविष्य में इसकी अधिकता की संभावनाओं से इंकार नहीं किया जा सकता ।

- निर्मल पंचरत्न, डोंगरगढ़